

# दुख का सागर

अल्लामा नज्म आफन्दी

डूबी हुई दुख के सागर में, सूरज की सुनहरी थाली थी  
उस चाँद की दिस को साँझ तलक, शब्बीर से दुनिया खाली थी  
बाबा ही के दम के साथी थे, अकबर भी गए असगर भी गए  
तकने को रही एक-एक का मुँह, छाती पे जो सोने वाली थी  
यूँ जग में न लगी आग कहीं, इस ढब से न उजड़ा बाग कहीं  
सूखी हुई पत्ती-पत्ती थी, टूटी हुई डाली-डाली थी  
दो खेत परे जल बहता था, और फूल इधर कुमहलाते थे  
बिन नीर ये सूखे जाते थे, और चार तरफ हरियाली थी  
हैदर के घराने वाले सब, सतवन्त भी थे सावन्त भी थे  
सहजे ही उठा ली बन्दों ने, मालिक ने जो बिप्ता डाली थी  
सरवर पे हसन की बिध्वा ने, दो चाँद के टुकड़े वार दिये  
बच्चे तो जियाले थे ही मगर, माता भी बड़ी दिल वाली थी  
क्या लुट के गये कर्बल से हरम, जब आई हैं सखियाँ मिलने को  
जिस माँग को पूछा उजड़ी थी, जिस गोद को देखा खाली थी  
संसार का चाहा उसने भला, कटवा दिया कुन्बे भर का गला  
शब्बीर के मन के साँचे में, करतार ने भक्ति ढाली थी  
मारे गए सत की सेवा में, धनबाद है ईश्वर भक्तों को  
मुखड़ों पे लहू की सुखी से, बढ़ चढ़ के खुशी की लाली थी  
ये जी से गुजरने वाले थे, यह बात पे मरने वाले थे  
कब मौत से डरने वाले थे, सौ बार की देखी भाली थी  
“नजमी”! ये हुसैनी चौखट है, याँ आ के मुरादे मिलती हैं  
इस द्वार से भिक्षा ले के चले, आए थे तो झोली खाली थी

## एहतेरामे मिंबर

जनाब शकील हसन शम्सी

कर्बला वालों के पैगाम को पहुँचाना है  
मिंबरों से न किसी शख्स पे नशतर फेंको  
कम किये हैं कि बढ़ाए हैं अली के दुश्मन  
अपने अन्दाजे खिताबत पे ज़रा गौर करो!!

♦♦♦

जो सर को हाथ में लेकर चले वह राही दे  
हुसैनियत को भिखारी नहीं सिपाही दे  
तू उस ज़बान को गुद्दी से खैच ले माबूद  
जो अपनी कौम को बरबादिओ तबाही दे!!

अमन की जा है ये सफ़े मातम  
इससे बुग्ज़ो इनाद मत बाँटो  
वास्ता तुमको आले अहमद का  
मिंबरों से फ़साद मत बाँटो!!

♦♦♦

दुश्मने मरकज़े तामीर सरे मिंबर हैं  
अब तो नावाकिफ़े तहरीर सरे मिंबर हैं  
अहले मजलिस को ये मालूम नहीं है शायद  
कातिले मक़सदे शब्बीर सरे मिंबर हैं!!